हम लोग

ہم بناتے ہیں بدلتے ہیں مزاج گلشن
نونہالان چمن آب و ہوا ہیں ہم لوگ

Ranchi, 15th June to 30th June, 2013, Vol-I, Issue-11-12 Pages - 8 Rs. 5/-

श्री परिमल नाथवानी

परिमल नाथवानी मुल्क की एक मशहूर शखसियत का नाम है। वो झारखंड से राज्य सभा के मेम्बर भी चुने गए हैं। रिलायंस इंडस्ट्रीज के एक बहुत बड़े अधिकारी हैं। उनहों ने यहां बहुत से एन. जी. ओं. भी कायम किया है और सच पूछिए तो वो इस झारखंड राज्य के अकेले एम.पी. हैं जिन्होंने इस इलाके को अपना कर्म भूमी बनाया है। अभी तक तो यही होता आया है कि एलेक्शन के बाद जब कोई मेम्बर चुन लिया जाता है तो वो फिर घर का रास्ता भूल जाता है। लेकिन नाथवानी जी ने इसे गलत साबित किया है। आदिवासियों के साथ उनका रिश्ता सिर्फ सियासी दिखावे की चीज नहीं है बल्कि उनके द्वारा चलाई गई योजनाएं हमें ये मानने पर मजबूर करती हैं के उनके दिल में इस सरजमीन में बसने वाले लोगों से उनका प्यार सच्चा है। आदिवासी समाज उनका कर्जदार है। उनहोंने तरक्की के जितने काम अकेले किये है उतने झारखंड के किसी पार्लियामेंट के मेम्बर ने नहीं किये हैं। राँची के करमटोली, इसलाम नगर और दूसरे इलाकों में उनके द्वारा चलाई गई योजनाएं अपने उरूज को पहुंची हैं। उसी प्रकार कांके प्रखण्ड के रेण्डो गाँव के सरना स्थल की बदहाली को भी दूर किया। पूजा स्थलों और चबूतरे भी बनवाए और उन इलाकों में बसने वाले ग़रीब झारखंडी अवाम के दिलों में अपना घर बनाया। कई गाँवों को स्वावलम्बी बनाने के लिए बहुत से काम भी उनसे जुड़े हुए हैं। आजादी के लिए जिन लोगों ने कुबार्नियां दीं उनमें टाना भगत भी

शामिल हैं उनहोंने संत टाना भगत की एक यादगार कायम की। वो गांधी जी के इस कथन पर विश्वास रखते थे कि हिंदुस्तान गाँव में बसता है और जबतक गाँव की हालत नहीं सुधरेगी देश तरक्की के रास्ते पर नहीं जा सकता।

इसलाम नगर में रहने वाले गरीब मुसल्मानों के दर्द को उनसे बेहतर कौन समेझ सकता है। गर्चे उन्होंने इसलाम नगर के लिए बहुत कुछ किया लेकिन अतिक्रमण की नीती ने इसे बर्बाद कर दिया। इसे बचाने के लिए वा सुप्रीम कोर्ट तक गए। झारखंड की अक्लियतों के लिए उन्होंने कोई एक नहीं दर्जनों काम किये हैं। उनका इस कौम पर बड़ा एहसान है। तालीम का मैदान हो या सेहत का नाथवानी की खिदमात को भुलाया नहीं जा सकता। अगर उनकी राह पर चलकर दूसरे जीते हुए एम.एल.ए और एम.पी. काम करें तो झारखंड के सर्वागीण विकास को कोई नहीं रोक सकता। वो एक रौशन ख्याल आदमी हैं और जिनकी कर्म भूमी का दायरा गुजरात से झारखंड तक फैला हुआ है। वो साहित्य, कल्चर और खेल के भी बहुत प्रेमी हैं। हज यात्रियों के लिए उनकी की गई कोसिसें यादगार रहेंगी। मैं ने अपने जीवन काल में ऐसे लोग बहुत कम देखे हैं जो अपने कामों पर ज्यादा यकीन रखते हैं और जिन्हें इसकी फिक्र नहीं होती कि कोई उनकी शान में कसीदे लिखे। वो इस आधूनिक युग के एक महान आदमी हैं और हम सब उनसे प्यार करते हैं।

एदारा

एक सवाल

भारत की मौजूदा सियासी सूरतेहाल गम्भीर सवालों को जनम दे रही है। कहीं ऐसा तो नहीं कि हम अपने जोंश और जुनून में नाजी इज्म और फासी इज्म की ओर बढ़ रहे हैं? कहीं ऐसा तो नहीं कि हम अपने ही मुल्क की जबान, साहित्य, धर्म और उससे जुड़ी हुई अहम चीज़ों को नजर अंदाज कर रहे हैं? मेरा सवाल ये है कि क्या इन्द्र धनुष के सातों रंगों में से किसी एक रंग को निकाल दें तो इसकी सुंदरता बाकी रहेगी? और इसकी खूबसूरती को गर्हन नहीं लगेगा? ये बहुसंख्यक समुदाय के बुद्धिजीवियों, फनकारों, कवियों और सियासत दानों का फर्ज है कि वो अक्लियतों का धर्म है कि वो बहुसंख्यक समुदाय के धर्म, उनके समाज और उनकी पहचान से जुड़ी हुई चीजों का एहतरांम करे। क्या बहुसंख्यक समाज और अल्पसंख्यक समाज दा कदम आगे चल कर अपनी मुश्किलों को हल नहीं कर सकते?

शीन अख्तर

झरिया में मुस्लिम महासभा

झरिया में मुस्लिम आबादी का एक जमे ग़फीर सुदेश महतो का भाषण सुनने के लिए जमा हुआ था। हमारी जानकारी के मुताबिक तकरीबन २५ हजार मुस्लिम अवाम ने सुदेश महतो का इस्तकबाल किया और आजसू पार्टि में शामिल होने कि ख्वाहिश जाहिर की। इस बड़े मजमे से खिताब करते हुए आजसू पार्टि के लीडर ने मुस्लिम अक्लियत को ये यकीन दिलाया कि वो ईमान से अहले ईमान के मसाइल हल करेंगे। अभी तक उनके साथ जो ना इंसाफियां हुई हैं वो नहीं होने देंगे और जो ताकतें मुस्लिम अक्लियत को हिन्दू भाइयों से अलग करने पर तुली हुई हैं उन्हें ऐसा करने से रोका जाएगा। उनके जान व माल की हिफाजत की जाएगी ये हमारा तारीखी फरीज़ा है।

एदारा